Degr
Sub.

PAGE NO.: (1)
DATE :

शेरशाह का मूल्यांकन

शेरशाह मध्यकालीन भारत का एक महान ~~शासक~~ सम्राट था, जिसने कड़े परिश्रम द्वारा राज्य प्राप्त किया था और उसे सुखी तथा समृद्ध बनाया था। शेरशाह एक महान शासक, प्रबंधक एवं सुधारक था। शेरशाह एक कुशल विजेता, योग्य शासक प्रतिभावान सेनानायक तथा उदार एवं प्रजाप्रिय शासक था। वह प्रजा हितैषी एवं दयालु शासक था तथा जनकल्याणकारी कार्य करना अपना कर्तव्य मानता था।

शेरशाह निष्पक्ष न्याय करता था। उसने न्याय के क्षेत्र में हिन्दुओं तथा मुसलमानों में कोई भेद-भाव नहीं किया। वह कहा करता था "न्याय एक ऐसा उत्तम धार्मिक संस्कार है कि उसकी प्रशंसा हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों जातियों के बादशाह करते हैं और" शेरशाह एक उच्च कोटि के शासक का प्रबन्धक था। डॉ॰ ए॰ एल॰ श्रीवास्तव के अनुसार, "अकबर की भाँति ही उसमें शासन करने के मौलिक सिद्धांतों के साथ छोटी से छोटी जानकारी को ग्रहण करने की क्षमता थी। शेरशाह गद्दी पर बैठते ही प्रचलित शासन प्रणाली की त्रुटियों को दूर कर कुशल शासन व्यवस्था की स्थापना की। इतिहासकार कीन के अनुसार "सुल्तान बनने के बाद प्रशासकीय क्षेत्र में उसने जो ख्याति प्राप्त की वह अन्य सुल्तानों में दुर्लभ है।"

शेरशाह ने सैन्य प्रबंध, नागरिक प्रशासन —

P.T.O.

राजस्व विभाग, न्याय व्यवस्था आदि क्षेत्रों में अनेक जनकल्याणकारी सुधार किये। अपने सुदृढ़ शासन-प्रबंध के कारण वह अकबर तथा अंग्रेज सरकार तक का अग्रगामी माना जाता है। अर्सकिन के अनुसार, उसने अपनी बुद्धि से राजसिंहासन प्राप्त किया था और सिद्ध कर दिया कि वह उस ऊँचे पद योग्य था।

शेर शेरशाह एक वीर सैनिक तथा योग्य सेनानायक था। उसने बंगाल, चौसा, तथा कन्नौज के युद्ध में अद्भुत सैन्य प्रतिभा का परिचय दिया। डॉ० कानूनगो के अनुसार "शेरशाह में चरित्र में शेर जैसी वीरता और लोमड़ी की तरह छल और कपट से काम लेता था। जबकि दुर्बल शत्रु पर वह शेर की भाँति टूट पड़ता था।"